श्रीमद् भागवत रसिक कुटुंब

॥ श्री गीत गोविंद॥

जरी की पगड़ी बांधे, सुंदर नैनों वाला,
कितना सुंदर लागे बिहारी, कितना लागे प्यारा,
जरी की पगड़ी बाँधे ॥

कानों में कुण्डल साजे, मोर मुकुट विराजे,
सखियाँ पगली होती, जब जब होठों पे बंसी बाजे,
हैं चंदा यह सांवरा, तारे हैं ग्वाल और बाल,
कितना सुंदर लागे बिहारी, कितना लागे प्यारा,
जरी की पगड़ी बाँधे ॥

जरी की पगड़ी बांधे, सुंदर आँखों वाला,
कितना सुंदर लागे बिहारी, कितना लागे प्यारा,
जरी की पगड़ी बाँधे ॥

लट घुंघराले बाल, तेरे कारे कारे गाल,
सुन्दर श्याम सलोने, तेरी टेढ़ी मेढ़ी चाल।

हवा में सर सर करता, तेरा पीताम्बर मतवाला,
कितना सुंदर लागे बिहारी, कितना लागे प्यारा।
जरी की पगड़ी बाँधे ॥

जरी की पगड़ी बांधे, सुंदर आँखों वाला,
कितना सुंदर लागे बिहारी, कितना लागे प्यारा,
जरी की पगड़ी बाँधे ॥

मुख पे तू माखन मलता, बल घुटने के चलता,
देख यशोदा भाग्य, देवों का भी मन है जलता।
माथे पे सोहे तिलक आँखों में काजल डारा,
कितना सुंदर लागे बिहारी, कितना लागे प्यारा,
जरी की पगड़ी बाँधे ॥

जरी की पगड़ी बांधे, सुंदर आँखों वाला,
कितना सुंदर लागे बिहारी, कितना लागे प्यारा,
जरी की पगड़ी बाँधे ॥

तू जब बंसी बजाए, मोर भी नाच दिखाए,
यमुना में लहरें उठती, और कोयल कू कू गाए।
हाथ में कँगन पहने, और गल वैजंती माला।
कितना सुंदर लागे बिहारी, कितना लागे प्यारा,
जरी की पगड़ी बाँधे ॥

जरी की पगड़ी बांधे, सुंदर आँखों वाला,

कितना सुंदर लागे बिहारी, कितना लागे प्यारा,

जरी की पगड़ी बाँधे ॥

॥ गीतम् 12 ॥

(अथ द्वादशप्रबन्धो गुणकरीरागेण रूपकताले गीयते)

पश्यति दिशि दिशि रहसि भवन्तम् ।

तदधरमधुरमधूनि पिबन्तम् ॥

नाथ हरे जय नाथ हरे सीदति राधाऽऽवासगृहे ॥ 1॥

त्वदभिसरणरभसेन वलन्ती ।

पतति पदानि कियन्ति चलन्ती ॥ 2॥ नाथ हरे

विहितविशदबिसकिसलयवलया ।

जीवति परमिह तव रतिकलया ॥ 3॥ नाथ हरे

मुहुरवलोकितमण्डनलीला ।

मधुरिपुरहमिति भावनशीला ॥ 4॥ नाथ हरे

त्वरितमुपैति न कथमभिसारम् ।

हरिरिति वदति सखीमनुवारम् ॥ 5॥ नाथ हरे

श्लिष्यति चुम्बति जलधरकल्पम् ।

हरिरुपगत इति तिमिरमनल्पम् ॥ 6॥ नाथ हरे

भवति विलम्बिनि विगलितलज्जा ।
विलपति रोदिति वासकसज्जा ॥ 7॥ नाथ हरे

श्रीजयदेवकवेरिदमुदितम् ।
रसिकजनं(न्) तनुतामतिमुदितम् ॥ 8॥ नाथ हरे